ज्योतिष दार्शनिक ढांचा समझने की दिव्य चेतना

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

मानवविज्ञान के विद्वानों ने ज्योतिष को एक प्रतीकात्मक सांस्कृतिक प्रणाली के रूप में अध्ययन किया है, जो समाज की विश्वदृष्टि, नैतिक मूल्यों और जीवन संरचना को प्रतिबिंबित करती है. क्लिफोर्ड गीर्त्ज़ जैसे विद्वानों ने इसे सांस्कृतिक प्रतीक तंत्र का उदाहरण माना है, जो मानव अनुभव को अर्थ प्रदान करता है. समाजशास्त्र में ज्योतिष को आधुनिकता और परंपरा के द्वंद्व के संदर्भ में देखा गया है. आधुनिकीकरण के बावजूद ज्योतिष की लोकप्रियता यह दर्शाती है कि आधुनिक समाज में भी अनिश्चितता, जोखिम और अस्तित्व संबंधी प्रश्नों के समाधान के लिए प्रतीकात्मक प्रणालियों की आवश्यकता बनी रहती है.

ज्योतिष मानव सभ्यता के सबसे प्राचीन और निरंतर विकसित ज्ञान अनुशासनों में से एक है. यह केवल भविष्यवाणी की प्रणाली नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय संरचना, समय गणना, प्रकृति चक्र और मानव जीवन के संबंधों को समझने का एक व्यापक दार्शनिक ढाँचा है. भारतीय परंपरा में ज्योतिष को वेदांग की संज्ञा दी गई है, जो इस तथ्य को रेखांकित करता है कि प्राचीन भारत में इसे धार्मिक आस्था का विषय मात्र नहीं, बल्कि विद्या और विज्ञान की एक अनिवार्य शाखा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था. ज्योतिष शब्द संस्कृत के ज्योति से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ प्रकाश, दीप्ति या दिव्य चेतना है. इस प्रकार ज्योतिष को प्रकाश का विज्ञान कहा जा सकता है, जो अज्ञान के अंधकार में मानव जीवन को दिशा प्रदान करता है.

ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में खगोलीय पिंडों, कालचक्र और ऋतुचक्र के उल्लेख मिलते हैं, जो दर्शाते हैं कि वैदिक सभ्यता में आकाशीय घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता था. भारतीय ज्योतिष मुख्यत: तीन अंगों में विभक्त है—सिद्धान्त, होरा और संहिता. सिद्धान्त ज्योतिष खगोलीय गणना, ग्रहों की गति, ग्रहण, विषुव, अयन, नक्षत्र और राशियों का गणितीय अध्ययन करता है. होरा ज्योतिष जन्मकुंडली के माध्यम से मानव जीवन के विविध पक्षों—व्यक्तित्व, स्वास्थ्य, शिक्षा, विवाह, धन, पद और आयु—का विश्लेषण करता है. संहिता ज्योतिष सामाजिक, प्राकृतिक और राष्ट्रीय घटनाओं जैसे वर्षा, अकाल, भूकंप, महामारी और राजनीतिक परिवर्तनों की भविष्यवाणी करता है. सिद्धान्त ज्योतिष का विकास भारतीय गणित और खगोल विज्ञान की महान परंपरा से जुड़ा है. आर्यभट्ट ने पृथ्वी की गोलाकारता, घूर्णन और ग्रहणों के वैज्ञानिक कारणों का वर्णन किया. वराहमिहिर ने 'पंचसिद्धांतिका' और 'बृहत्संहिता' में खगोलीय और प्राकृतिक घटनाओं का समन्वित विवरण दिया. ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य ने ग्रह गणना के जटिल सूत्र विकसित किए, जिनकी तुलना आधुनिक खगोल विज्ञान से की जा सकती है.

भारतीय ज्योतिष में समय की गणना अत्यंत सूक्ष्म है. पंचांग प्रणाली तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण के माध्यम से काल का विश्लेषण करती है. यह प्रणाली न केवल धार्मिक अनुष्ठानों, बल्कि कृषि, व्यापार और सामाजिक जीवन के लिए भी मार्गदर्शक रही है. भारतीय कृषि समाज ने पंचांग के आधार पर बुवाई, कटाई और वर्षा की संभावनाओं का अनुमान लगाया. होरा ज्योतिष मानव जीवन को ब्रह्मांडीय प्रतीकों के माध्यम से समझने का प्रयास करता है. जन्म के समय ग्रहों की स्थिति को मानव जीवन की संभावनाओं का प्रतीकात्मक मानचित्र माना जाता है. ग्रहों को देवता, ऊर्जा और मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के प्रतीक के रूप में देखा गया है. सूर्य आत्मा और चेतना का, चंद्रमा मन और भावनाओं का, मंगल ऊर्जा और साहस का, बुध बुद्धि और संचार का, बृहस्पति ज्ञान और धर्म का, शुक्र सौंदर्य और भोग का तथा शनि कर्म और अनुशासन का प्रतीक है. भारतीय दर्शन में कर्म और भाग्य का समन्वय स्वीकार किया गया है. ग्रहों को नियति के प्रतीकात्मक संकेतक माना गया है, जबकि कर्म को मानव की स्वतंत्र चेतना का क्षेत्र माना गया है. इस प्रकार ज्योतिष पूर्ण नियतिवाद नहीं, बल्कि संभावनाओं और प्रवृत्तियों का अध्ययन है. मुहूर्त ज्योतिष भारतीय जीवन संस्कारों का अभिन्न अंग रहा है. गर्भाधान, सीमंतोन्नयन, नामकरण, अन्नप्राशन, विद्यारंभ, उपनयन, विवाह और गृहप्रवेश जैसे संस्कारों के लिए शुभ समय निर्धारित करने की परंपरा रही है. इसका उद्देश्य मानव जीवन को प्रकृति और ब्रह्मांडीय चक्रों के साथ सामंजस्य में रखना था.

ज्योतिष की सामाजिक भूमिका भी अत्यंत व्यापक रही है. प्राचीन भारतीय राजाओं ने युद्ध, राज्याभिषेक और नीति निर्धारण में ज्योतिषीय परामर्श लिया. ग्रामीण समाज में पंचांग और ज्योतिष सामाजिक संगठन और समय संरचना का आधार थे. विश्व के अन्य सभ्यताओं में भी ज्योतिष का विकास हुआ. बेबीलोनियन, मिस्री, ग्रीक और चीनी सभ्यताओं में खगोलीय पिंडों के आधार पर भविष्य कथन की परंपरा थी. पश्चिमी ज्योतिष का विकास ग्रीक-रोमन परंपरा में हुआ, जो आज यूरोप और अमेरिका में लोकप्रिय है. आधुनिक समाज में ज्योतिष की लोकप्रियता कम नहीं हुई है. वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के बावजूद लोग ज्योतिषीय परामर्श लेते हैं. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ज्योतिष मानव को अनिश्चितता के बीच अर्थ और संरचना प्रदान करता है. यह व्यक्ति को आत्मचिंतन, जीवन योजना और निर्णय प्रक्रिया में सहायता करता है. समाजशास्त्रीय दृष्टि से ज्योतिष एक सांस्कृतिक विश्वास प्रणाली है. यह समाज के मूल्य, नैतिकता और विश्वदृष्टि को प्रतिबिंबित करता है. मानवविज्ञान के विद्वानों ने इसे प्रतीकात्मक भाषा प्रणाली के रूप में देखा है, जो व्यक्ति और समाज को अर्थ प्रदान करती है.

ज्योतिष और विज्ञान के बीच विवाद भी ज्ञानमीमांसा का एक महत्वपूर्ण विषय है. वैज्ञानिक समुदाय अनुभवजन्य साक्ष्य की कसौटी पर ज्योतिष को प्रमाणित नहीं मानता, जबकि ज्योतिष समर्थक इसे प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक ज्ञान प्रणाली बताते हैं. यह विवाद ज्ञान के स्वरूप, सत्य की परिभाषा और वैज्ञानिक पद्धति के प्रश्नों को जन्म देता है. भारतीय न्यायालयों और शिक्षा प्रणाली में भी ज्योतिष पर चर्चा हुई है. विश्वविद्यालयों में ज्योतिष के पाठ्यक्रम, शोध और अकादमिक अध्ययन किए जा रहे हैं. इसे भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन के रूप में स्वीकार किया गया है. डिजिटल युग में ज्योतिष ने नई पहचान प्राप्त की है. मोबाइल ऐप्स, ऑनलाइन कुंडली सॉफ्टवेयर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित ज्योतिषीय विश्लेषण और सोशल मीडिया राशिफल ने इसे वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाया है.

ज्योतिष में चांदी रखने के चमत्कारी लाभ

घर, तिजोरी और शरीर में चांदी रखने से चंद्र दोष शांत, मानसिक शांति और आर्थिक स्थिरता मिलती है. ज्योतिष शास्त्र में चांदी को केवल एक धातु नहीं, बल्कि चंद्रमा की शुद्ध ऊर्जा का वाहक माना गया है. चंद्रमा मन, भावनाओं, शांति, मातृत्व, सौम्यता और मानसिक संतुलन का कारक ग्रह है.

जिन लोगों की कुंडली में चंद्रमा कमजोर होता है, राहु-केतु या शनि का प्रभाव चंद्र पर होता है, उन्हें जीवन में मानसिक तनाव, अस्थिरता, डर, अनिद्रा, आर्थिक रुकावट और पारिवारिक अशांति जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है. ऐसे में ज्योतिष उपायों में चांदी को बेहद प्रभावी माना गया है. चांदी क्यों मानी जाती है शुभ? चांदी का सीधा संबंध चंद्रमा से है. चंद्रमा जल तत्व का ग्रह है और चांदी भी शीतल, शांत और तरल ऊर्जा को आकर्षित करती है. यही कारण है कि प्राचीन काल से ही लोग चांदी के बर्तन, चांदी के सिक्के, चांदी के गहने चांदी की छोटी डिब्बी घर में रखते आए हैं. चांदी रखने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, नकारात्मकता कम होती है और मन में स्थिरता आती है.

घर में चांदी कहाँ रखें?- ज्योतिष के अनुसार चांदी को सही दिशा में रखना बेहद जरूरी है. उत्तर दिशा में चांदी रखने से धन का प्रवाह बढ़ता है. उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) में चांदी का सिक्का या कटोरी रखने से मानसिक शांति मिलती है. तिजोरी में चांदी का सिक्का रखने से धन रुकता नहीं, बढ़ता है. पूजा स्थान में चांदी का दीपक या कटोरी रखने से घर में चंद्र ऊर्जा बढ़ती है.

शरीर में चांदी धारण करने के फायदे- ज्योतिष के अनुसार चांदी शरीर को भी संतुलित करती है. चांदी की चेन पहनने से तनाव कम होता है. चांदी की अंगूठी दाहिने हाथ की कनिष्ठा (छोटी उंगली) में पहनने से चंद्रमा मजबूत होता है. चांदी की पायल महिलाओं के लिए बेहद शुभ मानी जाती है. चांदी का कड़ा पहनने से मन शांत रहता है और गुस्सा कम होता है. किन लोगों को चांदी जरूर रखनी चाहिए? जिनकी कुंडली में चंद्रमा नीच का हो. जिन्हें बार-बार मानसिक तनाव और डर लगता हो. जिनके घर में कलह रहती हो. जिनके काम बार-बार अटक जाते हों. जिनकी नींद पूरी नहीं होती हो.

घर में ये रंग कराते हैं शुभ ऊर्जा

वास्तु अनुसार सही रंगों से पेंट करने पर घर में सुख, शांति, धन और सकारात्मकता बढ़ती है. घर की दीवारों का रंग केवल सजावट नहीं होता, बल्कि वास्तु और ज्योतिष के अनुसार यह घर की ऊर्जा, मानसिक स्थिति और आर्थिक प्रवाह को भी प्रभावित करता है. गलत रंग तनाव, झगड़े और रुकावट बढ़ा सकते हैं, जबकि सही रंग घर में शांति, समृद्धि और खुशहाली लाते हैं.

दिशा के अनुसार शुभ रंग1. उत्तर दिशा (धन की दिशा) हल्का हरा, पिस्ता ग्रीन, तोता हरा
यह दिशा कुबेर की मानी जाती है. हरे रंग से धन का प्रवाह बढ़ता है.

उत्तर-पूर्व (ईशान कोण - सबसे पवित्र), हल्का पीला, क्रीम, सफेद, हल्का नीला यहां हल्के और शांत रंग मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा बढ़ाते हैं.

पूर्व दिशा (सूर्य की दिशा), हल्का गुलाबी, सुनहरा, नारंगी. ये रंग घर में ऊर्जा, नाम और यश बढ़ाते हैं.

दक्षिण दिशा (यश और स्थिरता), लाल, मरून, गहरा गुलाबी (हल्के शेड में), यह दिशा शक्ति देती है, पर बहुत गहरा रंग न करें.

पश्चिम दिशा (स्थिरता) हल्का नीला, ग्रे, सिल्वर शेडये रंग मन को स्थिर रखते हैं.

कमरों के अनुसार शुभ रंग- बैठक क्रीम, हल्का पीला, हल्का हरा, **शयन कक्ष-** हल्का गुलाबी, लैवेंडर, हल्का नीला, रसोई नारंगी, पीला, हल्का लाल, **पूजा कक्ष-** सफेद, काम, हल्का पीला, **बच्चों का कमरा-** हल्का हरा, आसमानी, हल्का पीला बाथरूम/टॉयलेट- सफेद, हल्का ग्रे, हल्का नीला- किन रंगों से बचें? बहुत गहरा काला, बहुत गहरा लाल, पूरा घर गहरे ग्रे या डार्क ब्लू से न रंगें, छत पर गहरे रंग न करें, विशेष **वास्तु टिप्स-** छत हमेशा सफेद या बहुत हल्के रंग की रखें. घर का मुख्य दरवाजा गहरे भूरे, लकड़ी के रंग या मैरून शेड में शुभ माना जाता है. यदि घर में कलह रहती है तो हल्का गुलाबी रंग शांति लाता है. आर्थिक तंगी हो तो उत्तर दिशा में हरा रंग जरूर करवाएं.

तांबे के लोटे में ये पत्ता रखें, होगा शुभ

भारतीय परंपराओं में तांबे के बर्तन का विशेष महत्व माना गया है. खासकर तांबे के लोटे में जल भरकर उसे पूजा स्थान या घर के उत्तर-पूर्व दिशा में रखने की परंपरा सदियों से चली आ रही है. लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि यदि इस तांबे के लोटे में एक विशेष पत्ता रखा जाए, तो इसका शुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है. वास्तु शास्त्र और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार तुलसी का पत्ता तांबे के जल में डालकर रखने से घर में सकारात्मक ऊर्जा, सुख-समृद्धि और शांति का वास होता है. तुलसी को हिंदू धर्म में 'पवित्रता' और 'देवी स्वरूप' माना गया है. वहीं तांबा धातु को शुद्धिकरण और ऊर्जा संतुलन का प्रतीक समझा जाता है. जब ये दोनों एक साथ आते हैं, तो यह संयोजन घर के वातावरण को सकारात्मक बनाने में सहायक माना जाता है.

क्यों खास है तांबे का लोटा और तुलसी का पत्ता? वास्तु शास्त्र के अनुसार तांबा नकारात्मक ऊर्जा को सोखने की क्षमता रखता है. दूसरी ओर तुलसी का पत्ता वातावरण को शुद्ध करने और मानसिक शांति देने वाला माना गया है. मान्यता है कि तांबे के लोटे में जल भरकर उसमें 3 या 5 तुलसी के पत्ते डालकर पूजा स्थान या घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में रखने से घर में लक्ष्मी का वास होता है.

कैसे करें यह उपाय?- सुबह स्नान के बाद तांबे के लोटे में साफ जल भरें. उसमें 3, 5 या 7 तुलसी के पत्ते डालें. लोटे को पूजा घर या उत्तर-पूर्व दिशा में रखें. अगले दिन इस जल को किसी पौधे में अर्पित कर दें और नया जल भरें. यह प्रक्रिया नियमित करने से घर में सकारात्मकता बनी रहती है.

क्या कहते हैं धार्मिक ग्रंथ?- धार्मिक मान्यताओं के अनुसार तुलसी भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय है. वहीं तांबे का संबंध सूर्य से माना गया है. सूर्य ऊर्जा और तेज का प्रतीक है, जबकि तुलसी शांति और पवित्रता का. दोनों का संगम घर के वातावरण में संतुलन बनाता है.

घर में ये गलतियां बढ़ाती हैं वास्तु दोष

टॉयलेट दिशा से बिगड़ता है घर का संतुलन

वास्तु विशेषज्ञों के मुताबिक, सुबह मुख्य द्वार की सफाई, कपूर जलाना और शंख की ध्वनि जैसे सरल उपाय घर के वातावरण को सकारात्मक बनाते हैं. साथ ही, ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) की स्वच्छता और वहां सही वस्तुओं का स्थान बेहद महत्वपूर्ण माना गया है.

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर की बनावट, दिशा और रोजमर्रा की आदतें सीधे तौर पर ऊर्जा के प्रवाह को प्रभावित करती हैं. जनवरी 2026 में वास्तु से जुड़ी चर्चाओं में कुछ सामान्य लेकिन अहम गलतियों पर विशेष जोर दिया जा रहा है—जैसे गलत दिशा में टॉयलेट, बंद पड़ी घड़ियां और घर के अंधेरे कोने. माना जाता है कि ये स्थितियां नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाती हैं, जिससे मानसिक तनाव, आर्थिक तंगी और असंतुलन की स्थिति बन सकती है.

वास्तु विशेषज्ञों के मुताबिक, सुबह मुख्य द्वार की सफाई, कपूर जलाना और शंख की ध्वनि जैसे सरल उपाय घर के वातावरण को सकारात्मक बनाते हैं. साथ ही, ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) की स्वच्छता और वहां सही वस्तुओं का स्थान बेहद महत्वपूर्ण माना गया है. यदि इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखा जाए, तो बिना तोड़फोड़ के भी वास्तु दोष के प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है.

वास्तु शास्त्र में ईशान कोण यानी उत्तर-पूर्व दिशा को घर का सबसे पवित्र और ऊर्जा-संवेदनशील भाग माना गया है. इस दिशा में टॉयलेट, गंदगी या कबाड़ रखने से मानसिक तनाव, स्वास्थ्य समस्याएं और आर्थिक बाधाएं बढ़ने की मान्यता है. इसी तरह घर में बंद पड़ी घड़ियां ठहराव और रुकावट का प्रतीक मानी जाती हैं. वास्तु अनुसार, ऐसी घड़ियां तुरंत ठीक करवा लेनी चाहिए या हटा देनी चाहिए. सुबह उठते ही जिन चीजों पर नजर पड़ती है, उनका प्रभाव पूरे दिन के मनोभाव पर माना जाता है. टूटे कांच, हिंसक जानवरों की तस्वीरें या अव्यवस्थित दृश्य दिन की शुरुआत को नकारात्मक बना सकते हैं.

इसके बजाय सुबह प्रकाश, स्वच्छता और शांत वातावरण देखने की सलाह दी जाती है. बिना तोड़फोड़ के उपायों में सेंधा नमक के पानी का छिड़काव काफी लोकप्रिय है. घर के कोनों में नमक मिले पानी का छिड़काव करने से नकारात्मक ऊर्जा कम होने की बात कही जाती है. रसोई में रातभर जूठे बर्तन न छोड़ना भी सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने का सरल नियम है. शाम के समय शंख बजाना और कपूर जलाना वातावरण को शुद्ध करने के पारंपरिक उपाय माने जाते हैं.

मान्यता है कि शंख की ध्वनि से नकारात्मक कंपन समाप्त होते हैं और घर में शांति व समृद्धि का संचार होता है. घर में तुलसी या मनी प्लांट जैसे पौधे ईशान कोण में लगाने से सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है. यदि घर में प्रवेश करते ही थकान महसूस हो, तो मुख्य द्वार पर गणेश जी की तस्वीर या मूर्ति स्थापित करना शुभ माना गया है.

राशिफल

दिनांक- 01 से 07 फरवरी 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मकर राशि में, मंगल मकर राशि में, बुध मकर राशि में ता. 3 को 9/12 रात से कुम्भ राशि में, वक्री गुरु मिथुन राशि में, शुक्र मकर राशि में ता. 5 को 12/15 रात से कुम्भ राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कर्क सिंह कन्या और तुला राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 3 को बुध और ता. 5 को शुक्र कुम्भ राशि में आकर रूई अलसी, गुड, खांड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, ज्वार, चांदी में मंदे का झटका देकर तेजी आयेगी, समझकर काम करें. ता. 6 को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में परिभ्रमण से सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, लोहा, रूई, अलसी, गेहूं, तिलहन में तेजी आती है.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	01 फरवरी को	माघी पूर्णिमा, स्नानदान व्रत पूर्णिमा, माघ स्नान व्रत नियम समाप्त,
गुरूवार	05 फरवरी को	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

मेष

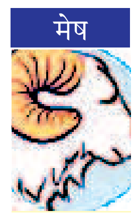

प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जधनु जायजाद की खरीद बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, राजनेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

वृषभ

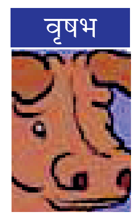

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफलता मिलेगी, जिससे हर क्षेत्र में आप अपने को खास और विशिष्ट स्थिति में पायेंगे, व्यवसायिक साझेदारों से सावधानी रखें, महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावना देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

मिथुन

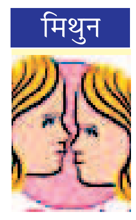

आप अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनो से आपकी प्रशंसा होगी, भूमि और घर खरीद बिक्री फायदेमंद रहेगी, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय कारणों से की गई यात्रा में बेहतर परिणाम मिलेंगे.

कर्क

साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं,जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

सिंह

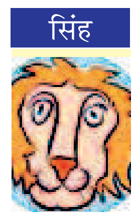

सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर दराज की यात्रा का विचार करेंगे, उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षायें बढ़ सकती है.

कन्या

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, आप अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताह के अंतिम समय स्वास्थ्य में गिरावट संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

तुला

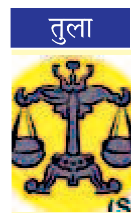

व्यापार यात्रा और धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, सफलता की ओर कदम बढ़ेगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बड़ी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी.

वृश्चिक

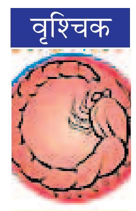

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी, अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े. सामाजिक क्षेत्र में सक्रिता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल कर सकते हैं, आप वित्तीय मामलों में सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा. किसी करीबी मित्र या रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है.

धनु

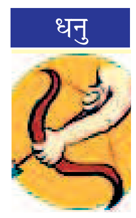

सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्त आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

मकर

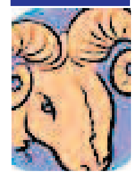

अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

कुम्भ

कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य के उचित मान सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा. आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, मानसिक असंतुलन किसी प्रकार का कष्ट अथवा घरेलू परेशानी से बचें. दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा. कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें.

मीन

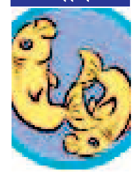

व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से समय महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दराज की यात्रा पर जा सकते हैं, पुराना पैसा मिलने का योग है.